Art and Artist role in Society

श्री राज बब्बर (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस देश के प्रबन्धकों, प्रशासकों और विचारकों के समक्ष एक ऐसी बहुचर्चित समस्या को रखना चाह रहा हूं जिसके बारे में आजकल बहुत चर्चा हो रही है । विषय था–"कला और कलाकारों की भूमिका इस समाज के लिए" लेकिन मैं उसको सीमित कर रहा हूं । मैं अपनी बात को नाट्य शास्त्र के उस श्लोक से शुरू करना चाहता हूं, उस परिभाषा से शुरू कराना चाहता हूं, जिसमें कलाकार और सामाजिक कलाकार की और कला की परिभाषा दी गई है :

"लोक वृतानु करणम् नाट्यम्"

लोगों की अवस्था का अनुकरण ही नाटक है ।

Art is the reflection of the society.

मान्यवर, दुर्भाग्य है कि वर्षों से एक क्षेत्र को जो आज सम्पूर्ण कला का प्रतीक है– फिल्मी दुनियां, इसके अंदर दुनियां की हर कला समाई हुई है, किसी भी रूप में क्यों न हो । आज उसके ऊपर यह लांछन है कि फिल्म के द्वारा वायवेंस, आब्सिनिटी और अश्लीलता जाहिर की जा रही है । मान्यवर, मैं इस सदन के द्वारा एक प्रश्न करना चाहता हूं । क्या आजादी के बाद इस क्षेत्र में इस देश के लोगों ने क्या इस प्रोफेशन के साथ में, इस महान प्रोफेशन के साथ में जो गंगा के समान पवित्र है जो हर की पौढ़ी के समान पवित्र है हर प्रोफेशन में, हर पेशे में जाएंगे तो आपके पिता का नाम या आपके किसी पुरूखों का या खानदान के नाम जरूरत पड़ती है उससे आप अपने पेशे को साबित कर सकते हैं अपने पेशे में, उस श्रणी पर जा सकते हैं । लेकिन यही एक ऐसा पेशा है जिसमें किसी बाप की, किसी खानदान की जरूरत नहीं है आप अपनी जगह खुद बनाते हैं। यह एक ऐसा पेशा है जिसमें राज बब्बर के बाप के नाम की जरूरत नहीं है, जिसमें नर्गिस दत्त की मां या बाप के नाम की जरूरत नहीं है । यह एक ऐसी हर की पौढ़ी है जो इस गंगा में स्नान करता है तो उसके नाम से पवित्र हो जाता है और उसके नाम से ही सारे देश में जाना जाता है, सारी दुनियां में जाना जाता है । मान्यवर, मैं आज पूछना चहता हूं कि आजादी के बाद क्या इस देश के लोगों ने वह नेता जो प्रबन्धक है, वह प्रशासक जो नीतियां बनाता है, वह विचारक जो इसके ऊपर टिप्पणियां करते हैं, क्या उन्होंने किसी ने भी इस क्षेत्र में इस प्रोफेशन को, इस पेशे को, इस पेशे के लोगों को अभिवाक की नजर से देखा ? आज हम पेशे को एक अभिभावक की जरूरत है, अभिभावक को दृष्टि की जरूरत है । मैं मानता हूं समाज के अंदर, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या वह अश्लीलता नहीं है, क्या आज आदमी के सेवा करने के रेजर को बेचने के लिए औरतों की नंगी तस्वीर नहीं लगाई जाती । मैं क्षमा चाहता हूं इस लब्द का इस्तेमाल कर रहा हूं । आज इस समाज के अंदर बिकने-बिकाने का, बेचने और बिकने का, खरीदने और बेचने का इस तरह का माहौल बन चुका है कि हर चीज बेची जाती है, खरीदी जाती है । इस खरीद-फरोख्त के माहोल में वह फिल्म इण्डस्ट्री जिसको इण्डस्ट्री की हैसियत आज तक नहीं मिली है, वह फिल्मी दुनियां के लोग जो अपनी क्षमता से जिनके बारे में नाचने-गाने वाले कहा जाता है भांड मिरासी कहा जाता था, मैं क्षमा चाहता हूं इनमें काम करने वाली महिलाओं को वैश्या कहा जाता था । आज उन्होंने समाज में अपनी इज्जत बनाई है, लोगों के दिलों को जीता है और कई ऐसे प्रोफेशन हैं जो लोगों से जुड़े हुए हैं, जैसे–राजनीति । मैं क्षमा चाहता हूं एक राजनीति में आने वाले लोग वह थे जो 1947 से पहले और 1947 के बाद से जिनकी गरिमा, जिनके नाम से एक आदर्श बनते थे, आज वह आदर्श जो हैं वह विलेन के रूप में हैं समाज के अंदर । क्षमा चाहूंगा बहुत सारे भरे मित्रों को, बहुत सारे मेरे गणमान्य सदस्यों को यह बुरा लगेगा, लेकिन खादी की वर्दी आज एक विलेन रूप धारण कर चुकी है । मान्यवर, आज इस प्रोफेशन के अंदर लोगों का कहना है कि यहां पर अश्लीलता दिखाई जाती है इसको बंद किया जाए । मैं पूछता हूं क्या इस समाज में जहां पर आज हर जगह हर चीज बिक रही है,

आज हर चीज बेची जाती है, मेरा किसी व्यक्ति, किसी विशेष व्यक्ति या किसी पार्टी से कोई संबंध नहीं है। यहां पर जूरी जब बनाई जाती है, मैं कहूंगा प्रबंधकों से उसका प्रबंधीकरण हो चुका है। जो पैसे वाला है आज वह जूरी का चेयरमैन होता है। पहले यहां पर सत्यजीत रे बैठा करते थे, मृणाल सेन बैठा करती थी, जहां पर नर्गिस दत्त बैठा करती थी आज यहां पर एक पैसे वाला जूरी का चेयरमैन बनकर बैठता है। मैं कहना चाहता हूं, मान्यवर, जहां पैसे की ताकत है, तो वहां पैसा कमाने के लिए आज जब हर चीज बिक रही है, राजनीति हो या कुछ भी क्यों न हो यहां पर किसी भी इमारत को, इस देश की धरोहर को किसी धर्म के नाम पर बेचा जाता है। जहां पर आज उस आराध्य के नाम को, भगवान के नाम को बेचा जाता है। तो अगर कोई इंसान मर्द और औरत के संबंधों को बेचकर पैसा कमाता है तो क्या बुराई है? जब जब लोग लोगों के दिलों में पहुंचने के लिए उन संबंधों को बेच रहे हैं, मैं उस समाज की बात कर रहा हू, उस कलाकार की बात कर रहा हू जिसने आज से 20 साल पहले यह कह दिया था कि देखें यहां क्या बिकने वाला है। मैं उस कलाकार की बात कर रहा हू जिसने उस क्षेत्र में रहकर कहा था--मैं उस देश का वासी हूं, जिस देश में गंगा बहती है और वही व्यक्ति, वही कला के क्षेत्र वाले लोग 30 साल के बाद कहते हैं कि राम तेरी गंगा मैली हो गई। क्या समाज ने इस सवाल को अपने सामने उठाया कभी? क्या प्रबन्धकों और प्रशासकों ने कभी सोचा कि ये कौन कलाकार लोग हैं जिन्होंने इस बात को छेड़ा है। क्यों नहीं हुआ ऐसा?

महोदय, आज क्यों कहा जाता है कि अश्लीलता है वहां? उसका कारण है। आज हर चीज बिक रही है। आज सत्ता में आने के लिए, गद्दी पर बैठने के लिए आराध्यों को बेचा जाता है, उनके नाम को बेचा जाता है, सड़क पर लाया जाता है। आज वह सारे के सारे लोग दोषी हैं। समाज का हर वर्ग दोषी है लेकिन केवल सिनेमा को दोषी ठहराया जाता है। वह राजनीति, वह प्रबंधक, वह प्रशासक, वह विचारक, सबके सब दोषी हैं। कलाकार तो हमेशा से लोक कलाओं में रहा है क्योंकि सामाजिक स्थिति का वर्णन करता रहा है। आज तक हमारे सिनेमा के अंदर वही 2 रुपए वाली लोहे की पिस्तौल लेकर चलते हैं लेकिन समाज के अंदर आज ए. के. 47 आ गई है।

महोदय, आज सुबह हमारी एक सम्मान-नीय सदस्या ने रेप का विषय उठाया था। कितना घृणित कार्य है लेकिन एक रेपिस्ट का रोल करने के बाद, आज ये राज बब्बर समाज में बहुत बड़ा कलाकार माना जाने लगा है। उसकी बहुत अहमियत मानी गई क्योंकि आज समाज के अंदर विलेन की उपासना होनी शुरू हो गई है। एक कुकर्म करने वाले व्यक्ति की उपासना होनी शुरू हो गई है, जो लोगों में जाना जाए। वह जान लिया जाता है। चाहें किसी धर्म के नाम से जाना जाए, राम के नाम को बेचने से जाना जाए या अल्लाह के नाम को बेचने से जाना जाए या किसी औरत और मर्द के संबंधों को बेचने से जाना जाए। ये राजनीति आज वही कर रही है, जो फिल्मों में हो रहा है।

मान्यवर, मैं आज आपके समक्ष विनती करना चाहूंगा कि इस सिनेमा को उद्योग साबित करके इसे उद्योग की श्रेणी में रखा जाए और इसके साथ न्याय किया जाए। इसको अभिभावक की दृष्टि से देखा जाए ताकि इसके अंदर इस तरह की चीजें उपस्थित न हों और सिनेमा उद्योग यह समझे कि हमें केवल बेचना ही नहीं है, हमारा समाज के प्रति कोई कर्तव्य भी है, धर्म भी है। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए धन्य-वाद।

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा): महोदय, राज बब्बर जी की यह पहली स्पीच थी, इसलिए मैंने बीच में टोकना उचित नहीं समझा।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): इस लिए मैंने घंटी नहीं बजाई।

श्रीमती सुषमा स्वराज : आपने घंटी नहीं बजाई, अच्छा किया लेकिन मैं एक चीज जरूर कहना चाहूंगी । वे आज यहां पहली बार बोल रहे हैं, कला के क्षेत्र में बहुत नाम है उनका और मैं तो समझती हूं कि उनकी अपनी फिल्मों में शायद ही हमने अश्लीलता नहीं देखी । तो मेरी अपनी रेक्सपैक्टेशन, अपनी अपेक्षा थी कि सारे तर्क देने के बाद कम से कम फिल्मों में फैल रही अश्लीलता की निन्दा जरूर करेंगे । मुझे समझ में नहीं आया कि इस समाज तर्कों की देकर वह कहना क्या चाहते हैं । यह फिल्मों में फैल रही अश्लीलता को बनाए रखने के पक्ष में हैं क्या ? राजनीति या समाज में अगर गंद फैल रहा है तो इके लिए सिनेमा में . . . (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल) : सुषमा जी, आपका नाम स्पेशल मेंशन में नहीं है, इसलिए मैं आपको अनुमति नहीं दे रहा हूं ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : आज फिल्मों में जो अश्लीलता फैल रही है, उसकी निंदा वह करते तो मुझे अच्छा लगता ।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल) : अलग से निंदा करने की आवश्यकता नहीं है । उन्होंने संकेत कर दिया है और वह समझ लेना चाहिए । जगेश देसाई जी आप बोलिए ।

THE VICE-CHAKMAN (SHRI The film industry or any film reflects the state of the society and the conditions prevailing in the society.

Performance of, Public Sector Undertakings

SHR JAGESH DESAl (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, Sir. there is a perception in this country thatt the public sector is no: performing well and it is a drain on the resources of the country. Day in and day out the public sector is critfcised,

Sir, the Centre for Monitoring Indian Economy has examined 212 public sector undertakings and 1,291 pri vate secor industries. And, 70 per cent of the gross sales of these companies are as follows. In the year 1992-93, the private sector growth was 6 per cent whereas he growth of public sector was 10 per cent. This is for the year 1992-93. As regards the working of the public sector in-dustries, they have given some facts and figures as compared to the private sector is far lagging behind the public sector. This is not a conclusion of Jagesh Desai but this is a conclusion of the study made by the Centre for Monitoring Indian Economy and this has appeared in the yesterday's Economic Times. As regards the net profit growth, in 1992-93, profit before tax of the public sector undertakings had gone up by 29 per cent whereas in the private sector, the growth was negative. It was 0.52; that means, the profit before tax was half per cent less than what it was during 1991-92 Similarly; the direct taxes paid by the public sector was more by 21 per cent as compared to earlier years whereas in the private sector it was minus 13 per cent. This is the picture which has been given by the study. What has happened to efficiency? I am now talking of three years and not one year because this type of denigration started during the last three years. During the years 1990-91 to 1992-93, the growth of sales of the private sector in all the three years was 16.74 per cent and the growth in the public sector was 14 per cent. In spite of less growth of sales, what are he results? The operating profit of the public sector has gone up by 20 per cent whereas, in the case of the private sector, it was 18 per cent. Is the sales are more, the profit would be more .But reverse is the case here. Similarly, regarding profit before depreciation, the growth in sector for the three years was 21 per cent whereas for private sector it was 2 per cent. As such, i hava all